अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ

और

“तुमसर अधिवेशन प्रस्ताव”

अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ और तुमसर अधिवेशन प्रस्ताव

अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ, छत्तीस कुल पंवार समाज की एकता, पहचान, इतिहास, और संस्कृति के संरक्षण हेतु निरंतर प्रयासरत है। यह महासंघ समाज को एकजुट करने, सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने और समाज के उत्थान के लिए समर्पित है। महासंघ का उद्देश्य समाज की ऐतिहासिक पहचान को जीवित रखना, युवाओं को सही दिशा में मार्गदर्शन देना, और समाज के हर वर्ग को समान रूप से उन्नति के अवसर प्रदान करना है।

तुमसर अधिवेशन प्रस्ताव का महत्व

तुमसर अधिवेशन प्रस्ताव, अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार महासंघ के द्वारा पारित किया गया एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है। यह प्रस्ताव समाज की एकता, पहचान और गौरवशाली इतिहास को परिभाषित करता है। इस प्रस्ताव के माध्यम से समाज ने अपनी सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा और उसके प्रचार-प्रसार का संकल्प लिया है। इसमें समाज के विभिन्न पहलुओं जैसे सामाजिक संबंध, संस्कृति, विवाह परंपराएँ, भाषा, और समाज का उत्थान पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

तुमसर अधिवेशन प्रस्ताव के मुख्य अंश

1. समाज की ऐतिहासिक विरासत

लगभग तीन सौ वर्ष पहले, मालवा-राजपुताना क्षेत्र से पोवार समाज नगरधन-नागपुर होते हुए वैनगंगा क्षेत्र में स्थायी रूप से बस गया। इस दौरान समाज में छत्तीस कुल की परंपरा स्थापित हुई और इन कुलों के बीच सांस्कृतिक और सामाजिक संबंध स्थापित हुए। समाज का यह ऐतिहासिक संदर्भ हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है और यह साबित करता है कि हमारी पहचान बहुत पुरानी और गौरवशाली है।

2. कुल (कुर) और विवाह संबंध

पोवार समाज में विवाह संबंधों का आधार कुल (कुर) होता है। यह परंपरा समाज के सामूहिक और सांस्कृतिक एकता को बनाए रखती है। समान कुल में विवाह वर्जित होता है, और प्रत्येक कुल का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व होता है। छत्तीस कुल पंवार समाज के रूप में समाज की पहचान की जाती है, जो समाज के गहरे सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों का प्रतीक है।

3. पोवारी भाषा और सांस्कृतिक पहचान

पोवारी भाषा हमारे समाज की विशिष्ट पहचान है। समाज के गीत, नेंग-दस्तूर, और परंपराएँ पोवारी भाषा में ही हैं, जो हमें अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ती हैं। यह भाषा केवल एक संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमारी संस्कृति और परंपराओं का प्रतीक है। इसे संरक्षित और प्रोत्साहित करना महासंघ की प्राथमिकता है।

4. युवाओं का मार्गदर्शन और समाजोत्थान

समाज का भविष्य हमारे युवाओं के हाथों में है। उनके उचित मार्गदर्शन से ही हम समाज के समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। महासंघ समाज के हर सदस्य को प्रेरित करता है कि वह अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक धरोहर को समझे और उसे आगे बढ़ाने के लिए सक्रिय रूप से कार्य करें। यही समाजोत्थान की दिशा है।

5. संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण

समाज की संस्कृति और परंपराएँ हमारे गौरवशाली अतीत का हिस्सा हैं। इनका संरक्षण और प्रसार करना हम सभी का कर्तव्य है। सामाजिक कार्यक्रमों, नेंग-दस्तूर, गीत, मान्यताएँ, और रीति-रिवाज हमारे समाज की पहचान हैं। महासंघ निरंतर प्रयास कर रहा है कि समाज के हर सदस्य तक इन परंपराओं और संस्कृतियों को पहुँचाया जाए, ताकि समाज में सांस्कृतिक पतन की स्थिति न उत्पन्न हो।

6. इतिहास की रक्षा और समाज की वास्तविक पहचान

अतीत में कुछ लोगों और संगठनों ने हमारे समाज के इतिहास के साथ छेड़छाड़ करने की कोशिश की, जिससे हमारे गौरवशाली इतिहास और संस्कृति को विकृत किया गया। महासंघ ने ऐतिहासिक दस्तावेज़ों के माध्यम से सही तथ्यों को सामने लाया है और समाज की वास्तविक पहचान को पुनः स्थापित किया है। तुमसर अधिवेशन प्रस्ताव के तहत सभी ऐसे प्रस्तावों को नकारा गया है, जो समाज की वास्तविक पहचान को नुकसान पहुँचा रहे थे।

7. स्वाभिमान और संस्कृति के प्रति जागरूकता

कोई भी समाज अपनी संस्कृति और परंपराओं के बिना नहीं रह सकता। छत्तीस कुल पंवार समाज ने हमेशा अपनी संस्कृति का पालन किया है और इसे बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महासंघ का उद्देश्य समाज के प्रत्येक सदस्य को अपनी संस्कृति के प्रति गर्व और स्वाभिमान महसूस कराना है, ताकि हम अपनी जड़ों से जुड़कर विकास की ओर बढ़ सकें।

8. प्रेरणा और समाज की उन्नति

अतीत का गौरव समाज के वर्तमान को प्रेरित करता है। यही प्रेरणा हमारे युवाओं को अपने जीवन में सांस्कृतिक मूल्यों के साथ सफलता की ओर अग्रसर होने में मदद करती है। महासंघ समाज के सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए समाजोत्थान के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। समाज का प्रत्येक सदस्य अगर अपनी सांस्कृतिक धरोहर को समझे और उसे अपने जीवन में उतारे, तो हम एक समृद्ध और सशक्त समाज की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं।

अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ द्वारा पारित किए गए तुमसर अधिवेशन प्रस्ताव ने समाज की पहचान और संस्कृति को पुनः स्थापित करने के साथ-साथ समाज के विकास की दिशा में एक मजबूत कदम उठाया है। यह प्रस्ताव हमारे समाज के प्रत्येक सदस्य को यह याद दिलाता है कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर और इतिहास को बचाए रखना हमारी जिम्मेदारी है। समाज की एकता, गौरवशाली अतीत, और सांस्कृतिक पहचान को ध्यान में रखते हुए हम अपने भविष्य को उज्जवल बना सकते हैं। महासंघ का यह प्रयास समाज के हर सदस्य को प्रेरित करता है कि वे अपनी पहचान पर गर्व करें और समाज की समृद्धि के लिए योगदान करें।

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार(पंवार) महासंघ